CHAPTER	
1	**Accounting : An Introduction** **लेखांकन : एक परिचय**
Unit : 1	**लेखांकन का अर्थ एवं क्षेत्र**

[1] **(द)** पुस्तपालन एक महत्वपूर्ण तथा व्यवस्थित तरीके से व्यवसायिक गतिविधियों के सम्बन्ध में वित्तीय आकड़ों के अभिलेखन से सम्बन्ध रखता है अर्थात् लेनदेनों का पूर्ण अभिलेखन तथा व्यवसाय पर वित्तीय प्रभावों का निर्धारण करता है तथा यह डाटा का विश्लेषण तथा निर्वचन नहीं करता।

[2] **(अ)** लेन–देन व्यवसाय के तथ्य को प्रदर्शित करता है तथा समझौतों को प्रदर्शित करता है तथा घटना व्यवसाय में घटित हुए लेन–देनों को परिणामस्वरूप में प्रदर्शित करता है। कहने का तात्पर्य है कि घटना लेन–देनों की अन्तिम प्रक्रिया होती है इस प्रकार वर्ष के अन्त में स्टॉक बचना एक घटना है।

[3] **(अ)** लेखांकन वित्तीय विवरणों की बात करता है अर्थात् चिट्ठा, लाभ–हानि खाता, और पुस्तपालन से तात्पर्य लेखा करने से है। इसलिये वित्तीय विवरण, लेखांकन के भाग हैं न कि पुस्तपालन का।

[4] **(अ)** 1970 में अमेरिकन इंस्टीट्यूट आफ सर्टिफाइड पब्लिक एकाउन्टेन्ट्स के लेखांकन सिद्धान्त बोर्ड ने लेखांकन के कार्यों का उल्लेख किया।

[5] **(स)** प्रबंध लेखांकन एक ऐसा लेखांकन होता है, जो एक व्यापारिक इकाई के प्रबंधको को आन्तरिक प्रतिवेदन से सम्बन्धित रखता है। यह सूचनाओं को एकत्रित करने के विभिन्न तरीकों तथा विभिन्न रिपोर्टों की रचना करता है जिनकी प्रबन्धकों द्वारा अपने कार्यों के निर्वाह हेतु अपेक्षा की जाती है।

[6] **(ब)** लेखांकन उन लेन–देनों तथा घटनाओं को मौद्रिक रूप में महत्वपूर्ण तरीके से लेखा करने वगीकृत करने, संक्षित करने, समीक्षा करने, निर्वचन करने तथा संवहन करने की कला है जो अंशतः वित्तीय लक्षण के होते हैं। इस प्रकार लेखांकन के प्रत्यक्ष लाभ हैं जिसमें तुलनात्मक भाग शामिल नहीं है।

[7] **(अ)** दोहरा लेखा प्रणाली लूकस पैसियोली ने प्रतिपादित किया था।

[8] **(द)** लेन–देन व्यवसाय की एक प्रक्रिया है, जो पैसे या बिना पैसे के लेन–देन के रूप में होती है लेकिन यह जब लेखांकन वर्ष के अन्त में होती है तो इसे घटना कहते हैं। इस प्रकार यह लेन–देन एवं घटना दोनों है।

[9] **(द)** मूल्य वृद्धि से तात्पर्य अर्थव्यवस्था में सामान्य मूल्य वृद्धि से है। इसलिए मूल्य वृद्धि से सम्बन्धित समस्याओं का निवारण मुद्रास्फीति लेखांकन में होता है। प्रबन्ध लेखांकन प्रबन्ध सम्बन्धी लेन–देनों का निवारण करता है। लागत लेखांकन उत्पाद इकाई और वित्तीय लेखांकन वित्तीय विवरणों की तैयारी से सम्बन्धित होता है।

[10] (द) लेखांकन सूचनाओं के उपयोगकर्ता आन्तरिक एवं बाहरी दोनों हो सकते हैं। आन्तरिक उपयोग कर्ताओं में संचालक मंडल, साझेदार, प्रबंधक एवं अधिकारी आते हैं तथा बाहरी उपयोग कर्ता विनियोजक, महाजन, आपूर्तिकर्ता, सरकारी संस्थाएं, कर्मचारीगण ग्राहक आदि होते हैं।

[11] (द) कम्पनी के वित्तीय विवरण के अन्तर्गत कुल विक्रय, कुल लाभ एवं हानि, पूंजी आदि का होना आवश्यक होता है लेकिन उत्पादन की लागत को इसके अन्तर्गत न होकर कास्ट सीट के अन्तर्गत होना चाहिये।

[12] (ब) लेन–देन को ''एक व्यवसाय, किसी कार्य का निष्पादन अथवा एक ठहराव'' के रूप में बोध कराने के लिये प्रयोग किया जाता है जबकि ''घटना'' को लेन–देन के परिणामस्वरूप घटित हुए परिणामों के रूप में प्रयोग किया जाता है।
किराये का भुगतान करना एक परिणाम नहीं है, यह एक लेन–देन है क्योंकि यह घटना का घटित होना प्रदर्शित कर रहा है।

[13] (ब) लेखांकन समीकरण के अनुसार
सम्पत्ति – दायित्व = समता
(चालू सम्पत्ति + स्थाई सम्पत्ति) – (चालू दायित्व + दीर्घकालीन दायित्व) =समता

[14] (अ) लेखांकन समीकरण के अनुसार
समता = सम्पत्ति–दायित्व
50,000 = (70,000 + चालू सम्पति) – 30,000
चालू सम्पति = 10,000

[15] (द) संक्षिप्तीकरण के चरण में वर्गीकृत डाटा को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है ताकि वह आंतरिक एवं बाहरी प्रयोग में लाया जा सके। अतः शुद्ध लाभ या हानि लेखांकन के संक्षिप्तीकरण के चरण में निकाला जाता है।

[16] (द) लेखांकन के उद्देश्य सम्मिलित करते हैं लेन–देन का नियमित लेखांकन, व्यापार के लाभों की गणना करना तथा व्यापार की आर्थिक स्थिति की गणना करना परन्तु यह कर अधिकारियों के साथ कर सम्बन्धी विवादों को सुलझाना सम्मिलित नहीं करता।

[17] (ब) किसी लेन–देन के अंतिम परिणाम को घटना कहा जाता है। वित्तीय वर्ष के अन्त में होने वाला ₹ 57,000 का लाभ एक घटना है चूँकि यह पूरे वर्ष हुए लेन–देन के परिणाम को दर्शाता है।

[18] (ब) माल का विक्रय, माल का क्रय और किराये का भुगतान एक व्यापारिक लेन–देन है। अन्तिम रहतिया ही वर्ष के अन्त में बचा रहता है इसलिए यह एक घटना है।

[19] (ब) लेखांकन का लेन–देन और घटनाओं की रिकार्डिंग और निर्णयन हेतु उपयुक्त सूचनाओं के प्रदर्शन हेतु सार्वभौमिक रूप से उपयोग होता है।

[20] (ब) अपने प्राचीन स्वरूप में लेखांकन ने संरक्षकों को अपने प्रबन्धकीय कार्यों को पूरा करने में सहायता की है। धनी वर्ग ऐसे प्रबन्धकों को अपनी सम्पत्तियों के प्रबन्ध हेतु नियुक्त किया करते थे। ये प्रबन्धक उनके समक्ष सामयिक रूप से अपने प्रबन्ध के खाते प्रस्तुत करते हैं। यही 'संरक्षणात्मक लेखांकन' आज के वित्तीय लेखांकन प्रणाली का मूल स्रोत है।

[21] (द) निर्वचन लेखांकन का अन्तिम कार्य है। यह सम्बन्धों के अर्थ तथा महत्ता के वर्णन से सम्बन्ध रखता है जैसा कि लेखांकन समंको की समीक्षा द्वारा स्थापित किया जाता है। रिकॉर्डिड

वित्तीय आँकड़ों की समीक्षा तथा निर्वचन ऐसे तरीके से किया जाता है जो साध्य उपयोगकर्त्ताओं को व्यवसाय की गतिविधियों के लाभोपार्जन तथा वित्तीय स्थिति के बारे में एक सार्थक निर्णय लेने के लिए समर्थ बनायेगा।
इस प्रकार उत्तर (द) सही है।

[22] (अ) तलपट के निर्माण के साथ पुस्तपालन, वित्तीय आँकड़ों को दर्ज करने का चरण है। यह लेखांकन के लिए एक आधार तैयार करता हैं। वित्तीय विवरण इस प्रक्रिया के भाग नहीं होते। पुस्तपालन जहाँ समाप्त होता है, लेखांकन वहाँ से शुरू होता है।

[23] (ब) **'विश्लेषण'** मद का अर्थ है, वित्तीय विवरणों में दिये गए डाटा का विधित्तामक वर्गीकरण करना। उन मदों का कोई उपयोग नहीं होता है जब वह सरल स्वरूप में हों।

[24] (ब) सरकार द्वारा की गयी आर्थिक गतिविधियां किसी को व्यक्तिगत लाभ नहीं प्रदान करती हैं बल्कि सार्वजनिक लाभ प्रदान करती हैं। ऐसी आर्थिक गतिविधियां, घटनाएं और लेन–देन दोनों होती हैं। घाटा/आधिक्य सरकार की आर्थिक गतिविधियों का परिणाम होता है, अतः यह एक घटना है।

[25] (अ) लेखांकन मानदण्ड – 1 के अनुसार, व्यवहारों तथा अन्य घटनाओं को उनके सार तथा वित्तीय सत्यता के आधार पर लेखांकित होना चाहिये न कि उनके कानूनी स्वरूप के आधार पर
उदाहरण : लेखांकन मानदण्ड – 19

[26] (स) व्यवसाय की वित्तीय स्थिति का निर्धारण लेखांकन रिपोर्टस अर्थात् आर्थिक चिट्ठा के आधार पर होता है।

[27] (अ) दिन–प्रतिदिन होने वाले कार्य को लेन–देन कहते हैं तथा इन्हीं लेन–देनों का अन्तिम परिणाम घटना होता है। इसी प्रकार अन्तिम रहतिया ₹ 20,000 एक घटना है।

[28] (ब) लेखाकनं के बाह्य प्रयोगकर्ता और आन्तरिक प्रयोगकर्ता दो वर्ग होते हैं–

(अ) आन्तरिक प्रयोगकर्ता में संचालक मण्डल, प्रबंधक, साझेदार आते हैं।

(ब) बाह्य प्रयोगकर्ता में निवेशक; ग्राहक; सरकार; ऋणदाताः आपूर्तिकर्ता आदि बाह्य प्रयोगकर्ता केवल मुख्य सूचनाओं में रूचि रखते हैं। जबकि आन्तरिक प्रयोगकर्ता विस्तृत सूचनाओं में रूचि रखते हैं।

[29] (ब) लेखन के प्रक्रिया में दो महत्वपूर्ण तत्व होते हैं–

(i) सूचनाओं को इकट्ठा करना

(ii) प्रयोगकर्ताओ तक पहुँचाना

✿